# अफवाहें और गलतफहमियां

**विवेक रूपी कवच को पहने न रखने वाले लोग किसी-न-किसी अफ़वाह या ग़लतफ़हमी का शिकार होते रहते हैं।**

मनुष्य चिरातीत से पशु और पक्षियों का शिकार करता आया है। पशु और पक्षी तो मनुष्य का शिकार कर नहीं सकते। हाँ, यदि कोई व्यक्ति भूखे और मानवीय खून के चस्के वाले शेर या शेरनी के सामने आ जाये तो वे मनुष्य का शिकार करते हैं। परन्तु ये तो कभी-कभी और किसी-किसी के साथ होने वाली घटना है जो कि निहत्थे और असावधान व्यक्ति के साथ जंगल में पेश आ सकती है क्योंकि शेर तो जंगली जानवर है। परंतु शहर में बुद्धिजीवी, पण्डित, विद्वान तथा तर्कशील व्यक्ति भी सहज से दूसरे मनुष्यों का शिकार बन जाते हैं क्योंकि वे विवेक रूपी कवच को उस समय पहने नहीं होते और आत्म-रक्षा के लिये जो जाँच-बुद्धि चाहिये, उससे वे उस समय रहित होते हैं। मनुष्य का शिकार करने वाला वह पशुत्व अथवा नरभक्षी राक्षस है अफवाह अथवा गलतफ़हमियाँ। इसलिए लोग आम बोलचाल में कहते भी हैं-''मैं अफ़वाहों का 'शिकार' हो गया था'' अथवा ''बहकावे'' या ''ग़लतफ़हमी'' का 'शिकार' हो गया था।

इस प्रकार के शिकार के लिए कोई दो नाली बन्दूक, छुरा या शेर का पंजा नहीं चाहिए। इसके लिये तो मुख से कुछ ऐसे शब्द निकलने चाहिए कि जिन पर कोई अन्धविश्वास कर ले। भूले-भटके में ऐसे कितने ही लोग हैं जो हर आये दिन किसी-न-किसी अफ़वाह, बहकाव या ग़लतफ़हमी का शिकार होते रहते हैं। ऐसे लोगों के बारे में कहा जाता है कि वे 'कान-के-कच्चे' हैं अथवा ज़रूरत से ज़्यादा बुद्धू हैं। वे अपने विवेक अथवा अपनी अक्ल का प्रयोग नहीं करते ! जैसे कोई असावधान व्यक्ति घर का दरवाज़ा सदा खुला रखता है और हर समय किसी अजनबी व्यक्ति के प्रवेश करने पर भी पूछताछ अथवा जाँच नहीं करता तो कोई चोर-लुटेरा अथवा ठग उसे लूट ले जाता है अथवा हत्यारा हत्या कर जाता है, वैसे ही ये लोग भी अपने अंधविश्वास का द्वार सदा खुला रखते हैं और अज्ञात शील वाले व्यक्ति को आने देते हैं और विवेक को पहरा देने से रोकते हैं। वे भी ना जाने कितनी ग़लतफ़हमियों का शिकार होते रहते हैं। हाय रे, उन्हें विवेक की कमज़ोरी खा गई। उन्हें अफ़वाहों और बहकावों की इल्लत खा गई। अफ़वाहें तो प्लेग की बीमारी से भी बहुत अधिक तीव्र रफ्तार से फैलती हैं। यों तो जंगल की आग भी तीव्र गति से जंगल को अपनी पकड़ में ले लेती है। परंतु अफ़वाहों के तो क्या कहने ! वे तो इन दोनों से भी तेज़ी से फैलती हैं और संसार के दुर्भाग्य की बात ये है कि लोग उन्हें फैलने देते हैं और उसमें सहयोगी होते हैं। कितने ही मज़हबी दंगे अफ़वाहों के फैलने से होते हैं। कितने ही झगड़े-रगड़े ग़लतफ़हमियों से होते हैं और कितने ही लोग बहकावे में आने के कारण धन, जीवन अथवा अपने वर्चस्व को गंवा बैठते हैं। उपनिषद में ये कहानी है कि-''एक व्यक्ति गाय खरीदने और बेचने का काम करता था। उसके गाँव से कुछ दूर एक शहर में हर शुक्रवार को एक बाजार लगता था जिसमें आसपास वाले लोग गऊएं या बकरियाँ ले आते और सौदा करके उन्हें बेच देते थे। वह व्यक्ति कई वर्षों तक ये कार्य करके अपनी रोजी-रोटी का प्रबंध करता रहा। एक दिन उसने सोचा कि अब बुढ़ापा आने लगा है; अभी ये समय है कि मैं अपने बच्चे को ये काम सिखा दूँ और ये धन्धा उसको सौंप दूँ। अब तो बच्चा बालिग़ हो गया है।

उसे अपना ये संकल्प जँच गया और उसने अपने पुत्र को बुला कर कहा-''बेटा, मैं चाहता हूँ अब ये कार्य करना सीख लो और मेरे जीते-जी इसे संभाल लो। आप भी अपने पाँव पर खड़े हो जाओगे और मुझे भी खुशी होगी और मेरे बुढ़ापे के दिन भी अच्छे कट जाऐंगे। बेटा आज्ञाकारी और भले मन वाला था। उसने कहा-''पिताजी, जैसे आपकी आज्ञा तथा आशीर्वाद हो।'' पहली बार पिता ने उसको गाय की एक बछड़ी दी जो गाय जैसे बनने की हो गई थी। उसने बच्चे को सब समझा-बुझा दिया और कहा कि इसे ले जाओ और इसका सौदा करके पैसे ले आओ।'' बच्चा घर से निकल पड़ा। रास्ते में एक सुनसान, बियाबान इलाका था अथवा छोटा सा जंगल था। उसमें तीन ठग सांठ-गांठ करके आने-जाने वाले व्यक्तियों को ठगा करते थे और अपनी ठग विद्या से कमाते थे। उनमें एक आगे बढ़ा और उस लड़के के साथ-साथ चलने लगा। लड़का भोला था। ठग ने उसे कहा कि इसे कहाँ ले जा रहे हो? बालक ने कहा-पशु-मण्डी में बेचकर पैसे ले आऊंगा।'' ठग ने कहा-''मुझे भी एक मेमना खरीदना था और मैं भी वहीं जा रहा हूँ। क्यों न तुम इसे यहीं मुझे बेच दो? दोनों का आना-जाना बच जाएगा।'' लड़के ने कहा-''अच्छा, बताओ इसका क्या दोगे?'' ठग ने कहा-'' इस मेमने का तो 500 रुपये ही दाम होता है।'' वह लड़का बोला-''ये मेमना थोड़े ही है, ये तो गाय की बछड़ी है। मूल्य तो इस बछड़ी का करना है''। ठग ने कहा-''अरे, तुम्हें तो ये भी मालूम नहीं है कि ये गाय की बछड़ी है या मेमना है। तुम मण्डी में जाकर क्या सौदा करोगे? अरे भाई, ये तो मेमना है मेमना।'' लड़का बोला-मेरे पिताजी ने तो कहा था कि इस बछड़ी का सौदा कर आओ। ये मेमना थोड़े ही है।'' तब ठग बोला, ''तो ठीक है, रहने दो। अच्छा मैं ज़रा तेज चलूँगा क्योंकि जल्दी पहुँचकर वापिस लौटना चाहता हूँ। ये कह कर वह चल दिया। वह लड़का सोचने लगा-''ये बड़ा अजीब किस्सा है। यह इसे मेमना कह रहा है; पिताजी इसे बछड़ी बता रहे थे !'' वह थोड़ा आगे गया था कि अब दूसरा ठग आ गया। वह बोला-''बेटा, क्या इसे बेचने जा रहे हो?'' वह लड़का बोला-''हाँ,क्यों आपको खरीदना है क्या?'' ठग बोला-''तभी तो पूछ रहा हूँ। 500 रुपये में देना चाहो तो दे दो; क्योंकि मेमने का तो यही भाव होता है। -शेष पेज 10 पर

**काठमाण्डु।** शाश्वत यौगिक खेती अभियान का शुभारंभ करते हुए नेपाल के उपराष्ट्रपति परमानंद झा, ब्र.कु.राज तथा ब्र.कु.राजू।

**भिवण्डी।** कमिश्नर जतिन सोनावने, ब्र.कु.मृत्युंजय, ब्र.कु.अलका, ब्र.कु.शिल्पा व ब्र.कु.सुमन दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

**छत्तरपुर।** शांतिदूत युवा साइकिल यात्रा अभियान के अवसर पर इंजीनियरिंग कालेज के प्राचार्य दिनेश चौरसिया, जे.पी.शक्य, रामप्रताप सिंह, ब्र.कु.शैलजा दीप प्रज्ज्वलित करते हुए।

**राजगढ़।** शांतिदूत युवा यात्रा में शामिल भाई-बहनें, जनपद अध्यक्ष रमाकांत तिवारी, भाजपा अध्यक्ष रघुनंदन शर्मा तथा अन्य।

## अनुभव

# बनने चला था डाकू बन गया राजयोगी

ब्र.कु.सत्यप्रकाश, सारानी खेड़ा, धौलपुर (राज.) ने अपने ईश्वरीय जन्म का अनोखा अनुभव सुनाते हुए कहा कि लौकिक में मैंने एक साधारण ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया। पिता का एकलौता पुत्र और तीन बहनें थी जिनमें एक की शादी हो चुकी थी और दो बहनें कुमारी थी जो बाद में ब्रह्माकुमारी बनीं और समर्पित जीवन जी रही हैं।

मैं जिस घटना का वर्णन करना चाहता हूँ वह 20-25 साल पहले की है। हमारे लौकिक पिता जी ने अपने छोटे भाई से लगभग साढ़े तीन बीघा जमीन मोल रूप में खरीदी थी। उसके लगभग पैसे भी दे दिये थे। थोड़े से पैसे बाकी थे, जिसके लिए पिता जी ने उन्हें कह दिया था कि 'आप रजिस्ट्री करेंगे तब बकाया पैसे हम आपको दे देंगे'। 6-7 वर्ष बीत गये पर चाचाजी ने रजिस्ट्री नहीं की बल्कि किसी और पार्टी को वही जमीन बेच दी। ये जानने के बाद हमें बड़ा दु:ख हुआ और हमने उसके इस विश्वासघात का बदला लेने के लिए डाकू बनने का निर्णय लिया। क्योंकि पिता जी गीता पढ़ते थे तो गीता के अनुसार वे चाहते थे कि दुश्मनों को मारना चाहिए और पाप का नाश करना चाहिए। जब 5 पाण्डव 100 कौरवों को मार सकते हैं तो भला एक व्यक्ति कुछ व्यक्तियों को नहीं मार सकता है। मैंने निर्णय लिया कि मुझे अपने चाचा जी व उनके सहयोगी कुल नौ व्यक्तियों को मारना ही है। मैं अन्दर ही अन्दर तैयारियां करने लगा। बन्दूक खरीदने की भी बात हो चुकी थी तथा डाकुओं से भी मिलने की तैयारी थी केवल इन्तजार था परिवार को व्यवस्थित करने का और खेती की फसल काटकर कुछ पैसे बन्दूक के लिए व बाकी पैसे परिवार के खर्च के लिए व्यवस्था करने का था।

इसी बीच मैं कुछ समय के लिए शान्ति प्राप्त करने व अपने मन को बहलाने के उद्देश्य से शान्ति की जगह ढूंढ़ रहा था। कई जगह गया, महात्माओं के पास, समझदार लोगों के पास पर कहीं भी शांति व संतुष्टता नहीं मिली। इसी बीच मैं एक ब्रह्माकुमार पवित्र भाई जी के सम्पर्क में आया। मैंने उनके सामने ज्ञान की गहराई को समझने की इच्छा प्रकट की तो उन्होंने मुझे नगरपालिका के पास प्रताप कॉलोनी धौलपुर राजस्थान में स्थित गीता पाठशाला में पहुंचा दिया और मुझे 7 दिन का कोर्स करने को कहा। मैंने कोर्स किया तो उसमें जब हम उस अध्याय पर पहुंचे जिसमें गीता में वर्णित युद्ध हिंसक या अहिंसक के बारे में समझाया गया है कि सही अर्थों में हमारा दुश्मन कौन है। भगवान भाई-भाई में युद्ध नहीं करा सकता क्योंकि भगवान के तो सभी बच्चे हैं, बच्चा कैसा भी हो पिता कभी उसे मारने का आदेश नहीं दे सकता। ये बात समझने पर मेरी बुद्धि बिल्कुल पलट गई और मुझे समझ में आ गया कि मेरे दुश्मन चाचा जी नहीं, मेरा लोभ है। इतने लोगों की हत्या करके, अपने रिश्तेदारों को दु:खी करके तो मैं बहुत बड़ा पाप करने जा रहा था। मैंने फैसला कर लिया कि मुझे ऐसा नहीं करना है, कानून को अपने हाथ में नहीं लेना है। ज्ञान के आधार पर सोचा कि हमने किसी जन्म में पैसा लिया होगा वो हमने चुका दिया और अगर नहीं लिया होगा तो भविष्य अगले जन्मों में भी वो चुकायेगा जरूर। न्यायकारी परमात्मा है, तो यह न्याय भी वही करेगा यह सोचकर मैंने अपने डाकू बनने का निर्णय बदल दिया। मेरे डाकू बनने की सोच के कारण मेरी छोटी बहन भी डाकू बनना चाहती थी। वह कहती थी कि मैं फूलन देवी डाकू से कम नहीं हूं, वह बदला लेने के लिए डाकू बन सकती है तो मैं भी बन सकती हूं। लेकिन मेरे फैसले के साथ उसने भी अपना फैसला बदल दिया और ज्ञान की राह अपनाई। जिस व्यक्ति को मैं बदला लेने के लिए मारना चाहता था, उस व्यक्ति की जिन्दगी तो मरे समान ही है, किये का उनको फल मिलते भी मैंने अपनी आंखों से देखा है।

**मीरजापुर।** शांतिदूत युवा यात्रा का शुभारंभ करते हुए राज्यमंत्री कैलाश चौरसिया, समाजसेवी मोहन आर्य, ब्र.कु.बिन्दु।

**देवबंद।** डी.एम.अजय कुमार यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुधा व ब्र.कु.जगपाल।